Central Zoo Authority
केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण

NEWSLETTER

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान का **ई-न्यूज़लेटर**

NATIONAL ZOOLOGICAL PARK
NEW DELHI

तीसरा एवं चौथा (दोहरा) संस्करण
जून - नवंबर 2021

हमें फॉलो करें

छायाचित्र
मास का

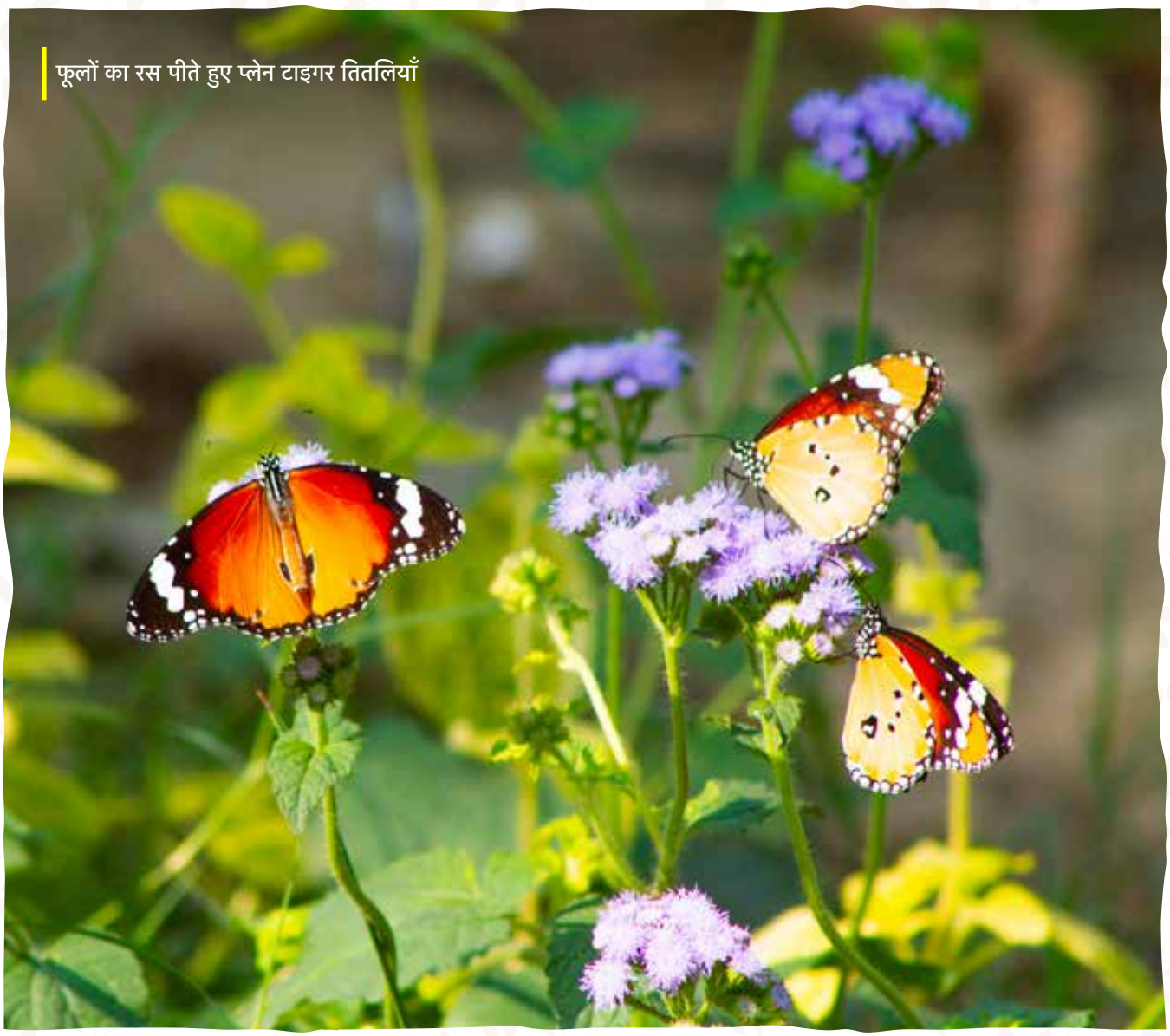

फूलों का रस पीते हुए प्लेन टाइगर तितलियाँ

तीसरा एवं चौथा (दोहरा) संस्करण
दिसंबर 2021

संपादक
डॉ. सोनाली घोष, आई एफ एस

संपादकीय टीम
रियाज़ अहमद खान
विभव श्रीवास्तव
दीपाली चतरथ
मानसी कुमार

छायाचित्र
डॉ. अभिजीत भावल
विभव श्रीवास्तव
मानसी कुमार

प्रकाशित द्वारा
राष्ट्रीय प्राणी उद्यान, मथुरा रोड,
नई दिल्ली

रूपरेखा द्वारा
कान्सेप्ट एण्ड बिऑन्ड

निदेशक की कलम से

प्राणी विनिमय यानि चिड़ियाघरों के बीच पशुओं का आदान प्रदान, चिड़ियाघर प्रबंधन का एक प्रमुख भाग है। प्राणी विनिमय ना सिर्फ चिड़ियाघर में बढ़ती पशुओ की आबादी को समान रूप से वितरित करने में सहयोग करता है बल्कि उनके आनुवंशिकी तथा जीन को भी मजबूत करने में योगदान देता है। नए जीवों का चिड़ियाघर में आगमन दर्शकों को उत्साहित करता है। वर्तमान में दिल्ली चिड़ियाघर में कुल 92 प्रजाति के 1200 जीव जन्तु हो गए हैं। विगत कुछ महीनों में चिड़ियाघर प्रशासन ने छतबीर चिड़ियाघर, चंडीगढ़ से एक शुतुरमुर्ग, सक्करबाग प्राणी उद्यान जूनागढ़ से तीन शेर, एक चौसिंघा तथा कछुआ, बाला साहब ठाकरे अन्तराष्ट्रिय प्राणी उद्यान, नागपुर से दो बाघ और दो भालू, इंदिरा गांधी प्राणी उद्यान, विशाखापत्तनम से दो जंगली कुत्ते, एक नर लकड़बग्घा, एक मादा हमाद्रीयस बैबून तथा पंद्रह स्टार कछुए विनिमय कार्यक्रम के तहत मंगायें हैं। आने वाले समय में ऐसे ही कई प्राणी विनिमय प्रस्तावित हैं जिस से प्रजातियों की संख्या में बढ़ोत्तरी तथा अकेले पशुओं के लिए साथी की व्यवस्था हो जाएगी।

छायाचित्र के बारे में

कीड़े मकोड़ों के संसार में तितलियाँ सबसे खूबसूरत मानी जाती हैं, वर्षों से इनके ऊपर कवियों, गायकों एवं चित्रकारों ने इनकी खूबसूरती के ऊपर रचनाएँ की हैं। कई कवियों ने तो इन्हें उड़ने वाले फूल का भी दर्जा दिया है। तितलियों का विभिन्न पारिस्थिकी तंत्रों में महत्वपूर्ण योगदान होता हैं तथा पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य की पहचान उसमें तितलियों की उपस्थिति से होती है।कुछ पेड़ पौधों और उनके ऊपर निर्भर रहने वाली तितलियों का विकासक्रम में साथ साथ विकास हुआ है। तितलियाँ विभिन्न भोजन श्रृंखलाओं का महत्वपूर्ण भाग होती हैं और कई प्रकार के पक्षी, चमगादड़ तथा अन्य कीटभक्षियों के आहार में शामिल होती हैं। राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में कई प्रकार की प्रजातियों की तितलियाँ मिलती हैं जो की ना सिर्फ यहाँ के पारिस्थितिकी तंत्र के लिए महत्वपूर्ण हैं बल्कि यहाँ घूमने आने वालों को अपनी खूबसूरती से आकर्षित भी करती हैं।

विषयसूची:

- **फोटो फीचर: प्राणी विनिमय**
  1. शकरबाग़ प्राणी उद्यान
  2. बाला साहब ठाकरे अन्तराष्ट्रिय प्राणी उद्यान, नागपुर
  3. वन्य जीव सप्ताह 1-8 अक्टूबर, 2021
  4. आजादी का अमृत महोत्सव
- **हिन्दी पखवाड़ा के विजेता: हिन्दी कविता**
- **स्पेशल फीचर: यात्रा वृतांत**
- **राष्ट्रीय प्राणी उद्यान खबरों में**
- **महीने का वन्यजीव: हिमालय गोरल**
- **वृक्ष: लसोरा/रिसाला/Sebestan Plum**
- **बर्ड वाचर का कोना**
- **शोध एवं शोधार्थी (Research and researcher)**
- **राष्ट्रीय प्राणी उद्यान का समाचार**
- **ग्रीन टिप्स (Green Tips)**
- **स्वयं सेवको का अनुभव**
- **बच्चों का कोना**
- **शब्द कोश से "जैव विविधता हॉट स्पॉट "**

फोटोफीचर

1. एनिमल एक्सचेंज (शक्करबाग प्राणी उद्यान)

फोटोफीचर

2. एनिमल एक्सचेंज (बाला साहब ठाकरे अन्तराष्ट्रिय प्राणी उद्यान, नागपुर)

फोटोफीचर

3. फोटो फीचर: वन्यजीव सप्ताह 1-8 अक्टूबर, 2021

1. ऑनलाइन पेंटिंग प्रतियोगिता

Result of Online Poster/Painting Competition
National Wildlife Week 2021
2nd-8th October 2021

	1st Position	2nd Position	3rd Position	Consolation	Consolation
Category 1st: Age 10-15 years old	Aisha Panda Bhubaneswar, Odisha	S. Thiyakshwa Chennai, Tamil Nadu	Rishit Dhara New Delhi	Dheeraj Kumar New Delhi	Rishab Maurya Greater Noida, Uttar Pradesh
Category 2nd: Age 16-25 years old	Sourav Bhowmick Chandrapura, Jharkhand	Sakshi Kaushik Gurgaon, Haryana	Dikshant Kumar Ghaziabad, Uttar Pradesh	Vikram Chandr V. Yanam, Puducherry	Nirmegh Basu Coochbehar, West Bengal

Follow us on:

2. शौकिया फोटोग्राफी प्रतियोगिता

Result of Online Amateur Photography
National Wildlife Week 2021
2nd-8th October 2021

1st Position:	2nd Position	3rd Position
SUJIT KUMAR PANDA Vizag,Andhra Pradesh	ROBIN KUMAR Dharuhera, Haryana	DHRUV KUMAR Keshav Puram, Delhi

Consolation	Consolation
ARSHIA GOEL New Delhi	GARGI DEEPAK WAGH Mumbai, Maharashtra

Follow us on:

ऑनलाइन पोस्टर/पेंटिंग प्रतियोगिता

विजेता श्रेणी: आयु (10-15 वर्ष)

प्रथम: आयशा पांडा
भुवनेश्वर, उड़ीसा

द्वितीय: एसथियाक्ष्वा
चेन्नई, तमिलनाडु

तृतीय: ऋषिता धर
नई दिल्ली

सांत्वना: धीरज कुमार
दिल्ली

सांत्वना: ऋषभ मौर्य
ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश

ऑनलाइन पोस्टर/पेंटिंग प्रतियोगिता

विजेता श्रेणी: आयु (16-25 वर्ष)

प्रथम: सौरव भौमिक
चंद्रपुरा, झारखंड

द्वितीय: साक्षी कौशिक
गुड़गांव, हरियाणा

तृतीय: दीक्षांत कुमार,
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

सांत्वना: विक्रम चंदूवी
यनम, पुडुचेरी

सांत्वना: निर्मेघ बसु
कूचबिहार, पश्चिम बंगाल

शौकिया फोटोग्राफी

प्रथम: रॉबिन कुमार
धारूहेड़ा, हरियाणा

द्वितीय: ध्रुव कुमार
केशवपुरम, दिल्ली

तृतीय: अर्शिया गोयल
दिल्ली

सांत्वना:
गार्गी दीपक वाघो
मुंबई, महाराष्ट्र

3. भारत के विभिन्न **जैवभौगोलिक क्षेत्रों पर विशेषज्ञ वार्ता**

4. ज़ूकीपर के लिए **ट्रैनिंग वर्क्शाप**

5. **वन्य-जीव सप्ताह का उत्सव:** माननीय आश्विन चौबे जी, राज्यमंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय पेंटिंग प्रतियोगिता

6. **ज़ूमेनिया (एक नागरिक विज्ञान प्रयास)** जारी हुआ,
नुक्कड़ नाटक आयोजित हुआ तथा ब्लैक काइट को टैग कर के आजाद किया

फोटोफीचर

4. आजादी का अमृत महोत्सव

फोटोफीचर

4. आजादी का अमृत महोत्सव

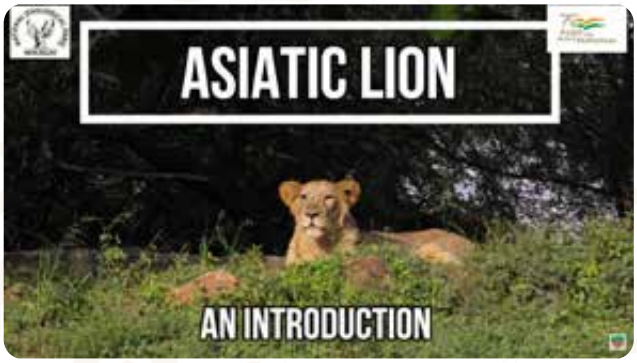

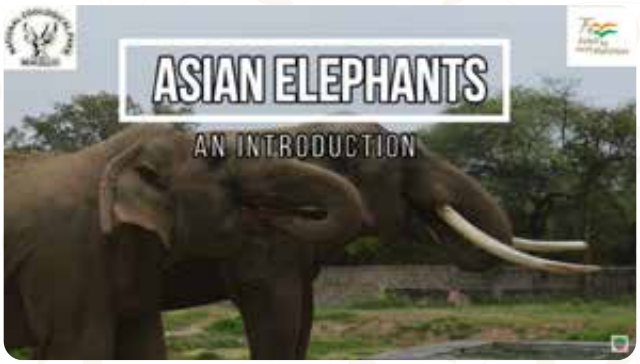

हिन्दी पखवाड़ा के विजेता

हिन्दी कविता

चिड़ियाघर का अनोखा संसार।
प्रकृति की यहाँ छठा अपरंपार
चिड़ियाघर का अनोखा संसार।
घने और हरे भरे पेड़ यहाँ पर
पक्षी कलरव करते उन पर
फूलों के यहाँ रंग हजार
चिड़ियाघर का अनोखा संसार।
कही पर बाघ कहीं पर शेर
कहीं पर तेंदुआ कहीं पर जगुआर
जैव-विविधता की है यहाँ भरमार
चिड़ियाघर का अनोखा संसार।
कहीं है भालू हिमालय वाला
कहीं है बंदर भोला-भाला
छुप जाते हैं बार बार
चिड़ियाघर का अनोखा संसार।
हिरण और मृग करते अटखेलियाँ
मन को लुभाती पक्षियों की बोलियाँ
देख कर इनको आता है प्यार
चिड़ियाघर का अनोखा संसार।
हाथी राजा मन को लुभाते
खेल खेल कर हमें बुलाते
घूम कर आओ एक बार
चिड़ियाघर का अनोखा संसार।

नाम - आरिका श्रीवास्तव
उम्र - 8 वर्ष
पिता का नाम - विभव श्रीवास्तव
Mail id- aarikasri13@gmail.com
फोन न. 7042410784

हिन्दी पखवाड़ा के विजेता

हिन्दी कविता

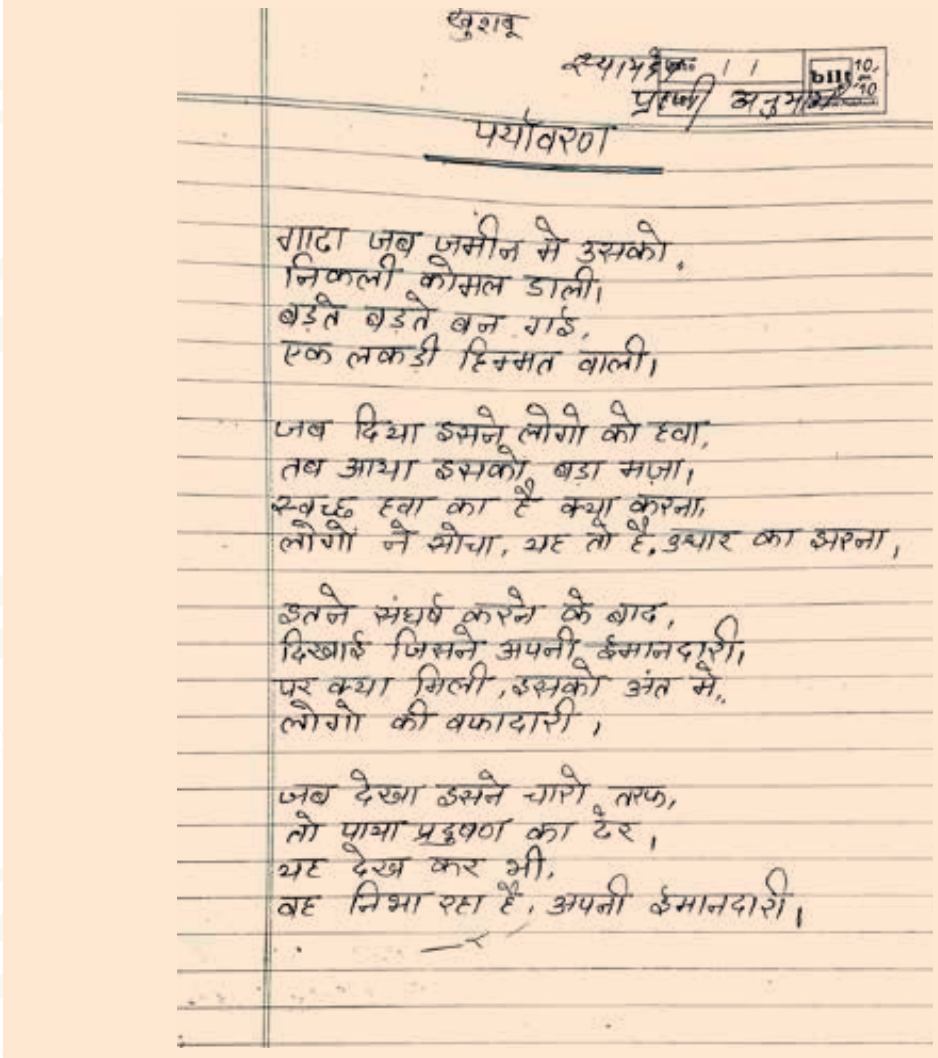

खुशबू

स्थायी क्र.

प्रथम अनुभाग

पर्यावरण

गाड़ा जब जमीन मे उसको,
निकली कोमल डाली।
बड़ते बड़ते बन गई,
एक लकड़ी हिम्मत वाली।

जब दिया इसने लोगो को हवा,
तब आया इसको, बड़ा मज़ा,
स्वच्छ हवा का है क्या करना,
लोगों ने सोचा, यह तो है, उधार का झरना,

इतने संघर्ष करने के बाद,
दिखाई जिसने अपनी ईमानदारी,
पर क्या मिली, इसको अंत मे,
लोगो की वफादारी,

जब देखा इसने चारो तरफ,
तो पाया प्रदूषण का ढेर,
यह देख कर भी,
वह निभा रहा है, अपनी ईमानदारी।

हिन्दी पखवाड़ा के विजेता

हिन्दी कविता

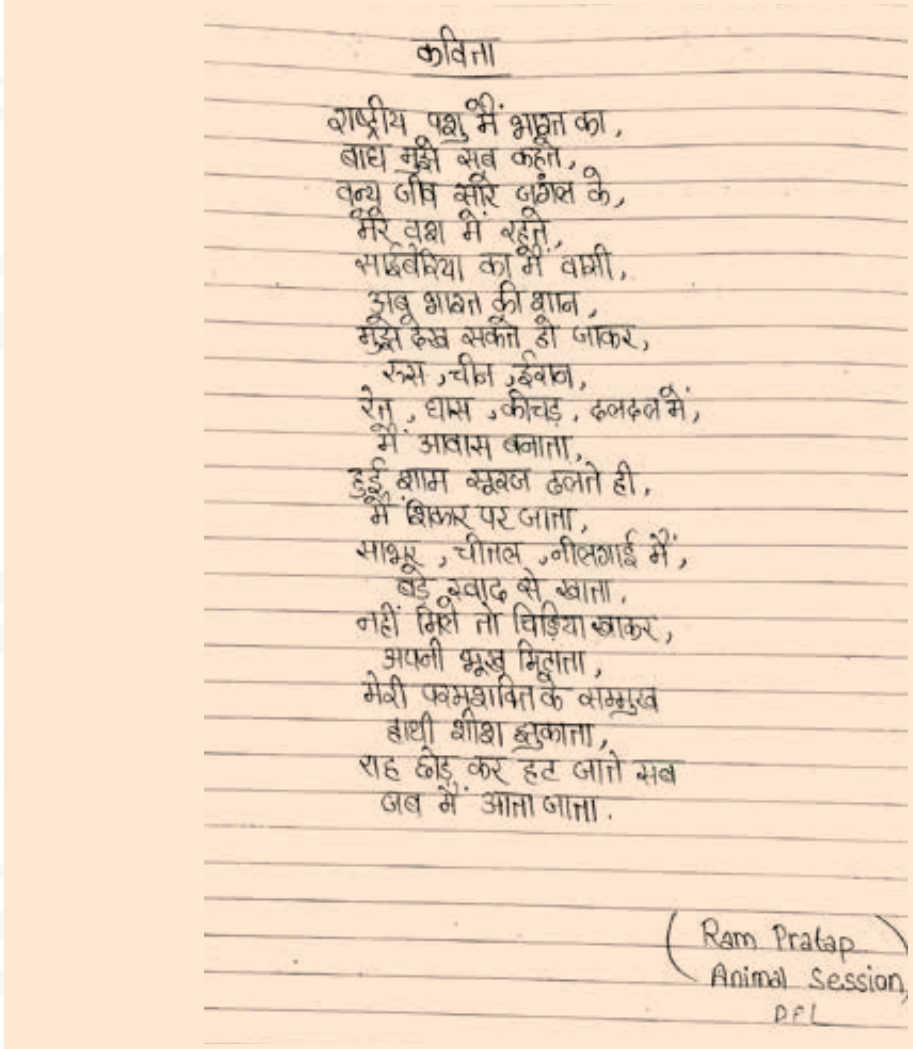

कविता

राष्ट्रीय पशु मैं भारत का,
बाघ मुझे सब कहते,
वन्य जीव सारे जंगल के,
मेरे वश में रहते,
साइबेरिया का मैं वासी,
आज भारत की शान,
मुझे देख सकते हो जाकर,
रूस, चीन, ईरान,
रेत, घास, कीचड़, दलदल में,
मैं आवास बनाता,
हुई शाम सूरज ढलते ही,
मैं शिकार पर जाता,
साम्भर, चीतल, नीलगाई में,
बड़े स्वाद से खाता,
नहीं मिले तो चिड़िया खाकर,
अपनी भूख मिटाता,
मेरी परमशक्ति के सम्मुख
हाथी शीश झुकाता,
राह छोड़ कर हट जाते सब
जब मैं आता जाता.

(Ram Pratap
Animal Session,
PEL)

स्पेशल फीचर
यात्रा वृतांत

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान, नई दिल्ली तथा इंदिरा गांधी प्राणी उद्यान, विशाखापट्टनम के बीच जंतुओं के विनिमय के लिए एक यात्रा प्रस्तावित की गई जिसमे ये निर्धारित किया गया की राष्ट्रीय प्राणी उद्यान से टीम जंतुओं को ले कर सड़क मार्ग से विशाखापट्टनम जाएगी और फिर वहाँ से अपने जंतुओं को ले कर सड़क मार्ग से ही वापस आएगी ।

यात्रा का प्रारंभ दिल्ली चिड़ियाघर से रात्री 10 बजे दिनांक 22/11/21 को किया गया। टीम में पशु चिकित्सा अधिकारी, शिक्षा सहायक यानि मैं , सहायक कीपर तथा वांहन चालक शामिल थे। कुल हम 6 लोगों की टीम चिड़ियाघर से नीलगाय, भारतीय लोमड़ी तथा गोरल ले कर विशाखापट्टनम के लिए रवाना हो गई। सारे जानवर एक ट्रक में तथा टीम एक कार में थी । रात भर हम ने यात्रा में बिताई, सुबह जब हम मोरेना पहुंचे तो ट्रक और कार को रोक कर हमने जानवरों को खाना और पानी दिया । अगला स्टॉप हमने ग्वालियर के चिड़ियाघर में लिया, वहाँ हमने पशु चिकित्साधिकारी डॉ. यादव के साथ चिड़ियाघर का भ्रमण किया साथ ही पशुओं के उचित रख-रखाव के बारे में भी विचार विमर्श किया।

संक्षिप्त विश्राम के बाद हमने सांयकाल अपनी यात्रा फिर प्रारंभ की, हमारा अगला पड़ाव गोंदिया था जो की महाराष्ट्र में पड़ता है। ये एक लंबा सफर था तो हमने रास्ते में ही थोड़ी थोड़ी देर रुक कर विश्राम किया और साथ ही अपने जंतुओं को भी भोजन कराया। इस दौरान हमारे पशु चिकित्सक ने उनका स्वास्थ्य परीक्षण भी किया। गोंदिया पहुँचने में हमें रात हो गई, पर ग्वालियर से गोंदिया तक का सफर अत्यधिक खूबसूरत था, हमने विंध्य तथा सतपुडा पर्वत श्रृंखला को कई स्थानों पर पार किया।

कहीं पर काँटेदार झाड़ियों वाले क्षेत्र, कहीं पर सागौन के वृक्ष तथा कहीं पर साल के घने जंगल हमने न जाने कितनी ही प्रकार के जंगल, नदियां , नाले तथा घाटियां पार की। रात्री विश्राम के पश्चात हमने अपनी यात्रा पुनः प्रारंभ की अब हम छत्तीसगढ़ के गाँव तथा जंगलों से गुजर रहे थे। छत्तीसगढ़ एक प्राकृतिक रूप से सुंदर प्रदेश है, यात्रा के दौरान हमें इस प्रदेश की सुंदरता का लगातार आभास होता रहा। अब हम ओडिशा प्रदेश में प्रवेश करने जा रहे थे, हमारी अब तक की यात्रा के दौरान ये हमारा पहला प्रदेश था जहां की बोली से हम सभी पूर्णतया अनभिज्ञ थे और इस बात का हमें जल्दी ही आभास होने वाला था। रात्री विश्राम के लिए हमने उमर कोट में वन विश्राम गृह की बुकिंग कराई थी पर सभी कुछ उड़िया भाषा में लिखे होने की वजह से हम वन विश्राम गृह खोजने में असमर्थ थे, और ऐसे समय में google map ने भी हमारी कोई मदद नहीं की। देर रात्री का समय होने की वजह से कोई

हमें रास्ता बताने वाला भी नहीं था। फिर हमने वहाँ के प्रभागीय वन अधिकारी को फोन लगाया, उन्होंने अपने दो कर्मचारी हमें रास्ता दिखने के लिए भेजे। रात्री विश्राम के बाद हम अब अपनी मंजिल की ओर अग्रसर थे और कुछ समय पश्चात हम पूर्वी घाट की खूबसूरत घाटियों तथा पहाड़ियों के रास्ते पर थे। इन रास्तों में हमने रागी तथा अलसी के खेत देखे। खेतों और घाटियों को पार करने के पश्चात सँकरे, घुमावदार तथा टेढ़े मेढ़े पहाड़ी रास्तों से हमारा सामना हुआ, यहाँ से ट्रक ले कर जाना एक अत्यंत कठिन कार्य था पर हमारे कुशल ड्राइवर ने इन रास्तों को सहजता से पशुओं को बिना कोई परेशानी हुए पार कर लिया । अब हमारी मंजिल काफी करीब थी और हवा में समुद्र के करीब होने का अहसास धीरे धीरे बढ़ता जा रहा था ।

विशाखापत्तनम एक समुद्र के किनारे पर बसा खूबसूरत शहर है, और इस शहर के एक छोर पर समुद्रतट पर स्थित है यहाँ का चिड़ियाघर, जिसमे विभिन्न प्रजाति के वन्य जीव रखे हुए हैं। हम रात्री करीब नौ बजे चिड़ियाघर पहुंचे, वहाँ अपने नव आगंतुकों के स्वागत के लिए निदेशक के साथ पूरी टीम मौजूद थी। रात्री में ही हमने सभी पशुओं को उनके बाड़ों में स्थानांतरित किया हमारे सारे पशु पूर्णतया स्वस्थ थे और अपने नए घर में खुश दिख रहे थे। फिर चिड़ियाघर की टीम के साथ हमने लजीज रात्री भोजन किया जिसके पश्चात हम अपने अपने विश्राम गृह में सोने चले गए।

विशाखापत्तनम में हमने दो दिन गुजारे, उस दौरान हमने चिड़ियाघर के अधिकारियों के साथ पूरे चिड़ियाघर को देखा तथा प्रबंधन एवं स्वास्थ्य से जुड़े मसलों पर आपस में विचार विमर्श भी किया। और अब हमारे वापस जाने का भी वक्त या गया था, 29 नवंबर की सुबह हम विशाखापत्तनम से अपने जानवर ले कर दिल्ली के लिए रवाना हो गए। हमारे साथ इंदिरा गांधी प्राणी उद्यान की एक टीम जिसमें एक पशु चिकित्सक, एक जीव विज्ञानी और एक वन अधिकारी शामिल थे भी चली। हमारा पहला पड़ाव हैदराबाद का नेहरू प्राणी उद्यान था, जहां हमने रात्री विश्राम किया। फिर सुबह सुबह अपने जानवरों के लिए चारे एवं भोजन की व्यवस्था करने के पश्चात हम नागपुर के लिए रवाना हो गए। हैदराबाद से नागपुर का रास्ता सुगम परंतु लंबा था और हमें बाला साहब ठाकरे अन्तराष्ट्रिय प्राणी उद्यान, नागपुर पहुँचने में 16 घंटे से अधिक का समय लग गया जिसकी वजह से रात हो गई। नागपुर में हमारे स्वागत के लिए डॉ. मयूर मौजूद थे, डॉ. मयूर ने हमारी काफी मदद की और हमें ठहरने के लिए उचित स्थान की भी व्यवस्था की। अगली सुबह हम सभी तैयार थे ग्वालियर के लिए रवाना होने को। नागपुर से ग्वालियर का रास्ता काफी लंबा था, हमने इस दौरान वन्य जीव संरक्षण से जुड़े कुछ क्षेत्र देखे जिसमे राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 44 पर बने सबसे लंबे एनिमल अन्डरपास को भी हमने देखा, यह अन्डरपास पेंच टाइगर रिजर्व के बीच से गुजरता है जहां ये वन्य जीवों के सुगम विचरण में सहयोग करता है। रात भर यात्रा करते एवं बीच बीच में थोड़ा विश्राम करते करते हम सुबह ग्वालियर के चिड़ियाघर में पहुंचे, यात्रा के दौरान हमारे साथ आए इंदिरा गांधी प्राणी उद्यान के पशु चिकित्सक समय समय पर पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण करते रहे। ग्वालियर में थोड़ी देर के पड़ाव के पश्चात हम दिल्ली के लिए रवाना हो गए। दिल्ली में हमारे पशु चिकित्सकों तथा कीपर की टीम तैयार खड़ी थी, हमारे वहाँ पहुंचते ही सारे पशुओं को उतार कर उनके क्वॉरन्टीन सेंटर पर भेज दिया गया, चार दिन की थका देने वाली यात्रा के बावजूद हमारे सारे जानवर स्वस्थ थे। हमारी यात्रा इसी के साथ समाप्त तो हो गई पर इसका अनुभव हमारे दिमाग में हमेशा के लिए बस गया।

—

विभव श्रीवास्तव (शिक्षा सहायक)

खबरों में
राष्ट्रीय प्राणी उद्यान

आपके मनोरंजन के लिए दिल्ली के चिड़ियाघर में आए कई नए मेहमान

2 वाइल्ड डॉग, 15 स्टार कछुए, लकड़बग्घा और बबून लाए गए है

जू को मिलीं महागौरी, शैलजा, अदिति और सिद्धि

मां दुर्गा के स्वरूपों पर मंत्री ने रखे चिड़ियाघर के नए मेहमानों के नाम

HOW ONLINE POLL HELPED DELHI ZOO FIND SUITABLE NAMES FOR ITS ANIMALS

Naming Inmates? No Ostrich Approach Here

NEW IDENTITIES

IN THE THICK OF ACTION

RHINO'S DAY OUT: Rhinos Maheshwari and Anjuha got a special treat from zookeepers on World Rhino Day at National Zoological Park, Delhi. Celebrated on September 22 globally to honour the five species of rhinos, efforts are made to make people aware and conserve what is left of these wonderful creatures. The five species include the black and white ones of Africa, greater one-horned of India and Nepal, and the Javan and Sumatran rhinos of Southeast Asia. This year, the zoo welcomed Indian Oil Corporation that had chosen the greater one-horned rhino as their mascot.

मनाया जा रहा है आजादी का महोत्सव, यह सिलसिला 75 सप्ताह तक चलेगा

पर्यटकों ने लगाई गुहार, जंगलों में जानवरों का शिकार बंद होना चाहिए

पर्यटक बोले, यह अच्छी पहल...

नवंबर में 62 साल का हुआ दिल्ली का चिड़ियाघर, कभी 5 पैसे के थे टिकट

जानें चिड़ियाघर का सफर

आजादी के बाद बनी चिड़ियाघर की रूपरेखा

1 नवंबर, 1959 को हुआ उद्घाटन

4 जोन में डिजाइन हुआ चिड़ियाघर

1992 में बनी सेंट्रल ज़ू अथॉरिटी

चिड़ियाघर घूमने आए स्कूली बच्चों ने मनाया विश्व दयालुता दिवस

गुनगुनी धूप और चिड़ियाघर में अठखेलियां...

आजादी का अमृत महोत्सव | जानवरों, पक्षियों व सांपों के रखरखाव और उनकी देखभाल पर होंगी चर्चाएं, पर्यटकों को किया जाएगा जागरूक

चिड़ियाघर में जीवों की 75 प्रजातियों के बारे में लें जानकारी

राहुल सिंह • नई दिल्ली

देशभर में इन दिनों आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इसको लेकर सरकारी विभाग लगातार काम कर रहे हैं। वहीं, अब इस कड़ी में दिल्ली चिड़ियाघर भी जुड़ गया है, जो देशभर के चिड़ियाघरों के साथ मिलकर आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। इस दौरान 75 सप्ताह में देश के 75 चिड़ियाघरों में मौजूद जीवों की 75 प्रजातियों के बारे में जागरूक किया जाएगा। इस जागरूकता के दौरान चिड़ियाघर के कर्मचारियों और चिड़ियाघर में आने वाले पर्यटकों को एक प्रजाति के जानवर, पक्षी और सांप के रखरखाव के बारे में जानकारी दी जाएगी।

चिड़ियाघर की निदेशक सोनाली घोष ने बताया कि केंद्र सरकार के अमृत महोत्सव कार्यक्रम में देशभर के 75 चिड़ियाघरों को दिल्ली के चिड़ियाघर से जोड़ने का काम किया जा रहा है। इसकी शुरुआत मुंबई के चिड़ियाघर से की गई, जिसमें हाथी की प्रजातियों के बारे में बताने के लिए लगातार आनलाइन कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

इसके अलावा दिल्ली के चिड़ियाघर में हर सप्ताह अमृत महोत्सव के दौरान एक-एक कर वन्य जीवों की प्रजातियों के बारे में बताया जा रहा है। बृहस्पतिवार को गुजरात के राजकोट स्थित चिड़ियाघर में अजगर की तीन प्रजातियों के बारे में जानकारी दी गई। वहीं, दिल्ली चिड़ियाघर में सफेद बाघ के बारे में विशेषज्ञों द्वारा बताया गया।

चिड़ियाघर में आयोजित आजादी का अमृत महोत्सव में शामिल पर्यटक • सौ. चिड़ियाघर प्रशासन

IUCN
संरक्षण स्थिति:
संकट निकट

महीने का वन्यजीव:
हिमालयी गोरल

कुल: **बोविडी**, वैज्ञानिक नाम: ***Naemorhedus goral***

हिमलयी गोरल एक भूरे रंग का छोटा बकरी-हिरण होता है। ये शिवालिक पर्वत श्रृंखला के नम उष्ण कटिबंधीय वनों में, उत्तर पूर्वी पर्वत श्रृंखला के मोनटेन नम सदाबहार वनों में तथा गोरल प्रायः हिमालय की 900 से 2700 मीटर की ऊंचाई वाले पहाड़ीनुमा टीलों वाले क्षेत्रों में निवास करते हैं। ये एक सामाजिक प्राणी हैं जो 4-5 सदस्यों के समूह में रहते हैं। वयस्क नर हमेशा अकेला रहना पसंद करता है और प्रजनन के दौरान समूह के मादाओं से मिलने आ जाता है। किसी भी प्रकार के खतरे को देख कर या भांप कर समूह के सदस्य अपनी लातों से जमीन पर आवाज कर एक दूसरे को सतर्क कर देते हैं। जब यह खुशी महसूस करते है तब अपनी पिछली टांगों के के सहारे खड़े हो जाते हैं तथा सिर को एक तरफ झुका लेते हैं।

गोरल घास एवं पत्ती चरने वाला जीव है। यह सुबह और शाम को ज्यादा सक्रिय होते हैं। अगर मौसम बादलों से घिरा एवं ठंडा हो तो ये दिन भर घास चरने में व्यस्त रहते हैं।

प्राकृतिक आवास में गोरल के बच्चे मई एवं जून माह के दौरान देखे जाते हैं। इनकी प्रजनन ऋतु नवंबर-दिसंबर होती है। मादा 5-6 महीने के गर्भकाल के पश्चात 1 बच्चे को जन्म देती है।

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में गोरल के आवास की संरचना कुछ इस प्रकार की गई है जिससे की इनके प्राकृतिक चट्टानों वाले आवास का आभास होता है।

महीने का वृक्ष:
लसोरा/रिसाला/Sebestan Plum

कुल: **बोराजीनेसी**, वैज्ञानिक नाम: ***Cordia myxa***

लसोरा के छोटे सफेद फूल

लसोरा एक उष्णकटिबंधीय क्षेत्र का माध्यम आकार का वृक्ष है. ये एशिया के समशीतोष्ण तथा उष्णकटिबंधीयक्षेत्र का मूल निवासी है। इसे उष्णकटिबंधीय अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के क्षत्रों में काफी समय पहले लगाया गया था। इसे इसकी विशेषताओं की वजह से इसके मूल निवास के बाहर काफी बड़े पैमाने पर उगाया जाता है। इसकी पत्तियां, फल एवं फूल खाने योग्य होते हैं और इन्हें ना सिर्फ वनों में रहने वाली जनजातियाँ बल्कि शहरों में बसने वाले लोगो द्वारा भी खाया जाता है। इस पेड़ और इसके विभिन्न भागों का पारंपरिक चिकित्सा में काफी महत्व है। कई शोधों से पता चलता है की लसोरा मधुमेह विरोधी, एंटी इंफलामेट्री, एंटीऑक्सीडेंट और एंटी माइक्रोबीअल विशेषताओं से परिपूर्ण है। फलों का पल्प काफी चिपचिपा होता है और कभी कभी ये चिड़िया पकड़ने के काम भी आता है। इनकी हल्की एवं मुलायम लकड़ी गाँव में नाव बनाने के काम आती हैं। इनकी पत्तियां एक प्रमुख चारा हैं। राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में लसोरा का फल बंदरों, भालुओं तथा अन्य फल खाने वाले जंतुओं को खाने में दिया जाता है।

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में लसोरा के पके हुए फल

बर्डवाचर का कोना

उत्तर भारत में प्रवासी पक्षियों का आगमन शीत ऋतु के आने के साथ ही प्रारंभ हो जाता है और ग्रीष्म ऋतु के आने के पूर्व ही प्रवासी पक्षी अपने अपने क्षेत्रों में वापस चले जाते हैं। शीत ऋतु के चरम पर पहुँचने के साथ ही विभिन्न तालाब एवं पानी वाले क्षेत्र पक्षियों के कलरव से गूंज उठते हैं। वैसे तो इस दौरान पानी वाले पक्षियों का आगमन बड़ी संख्या में होता है पर कुछ पक्षी जो मुख्यताय पानी के ना हो कर जमीन पर ज्यादा समय बिताने वाले होते हैं वो भी इस दौरान इन क्षेत्रों में आते हैं, इनमे वैगटैल प्रमुख होती हैं। राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में सबसे पहले आने वाले प्रवासी पक्षियों में ग्रे वैगटैल प्रमुख हैं। ये हिमालय पर्वत, पाकिस्तान तथा बलूचिस्तान की ऊंची पहाड़ियों से शीत ऋतु बिताने उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में आते हैं और ग्रीष्म काल के आने के पहले ये अपने ब्रीडिंग क्षेत्रों में वापस लौट जाते हैं ।

Research and **Researcher**

Being a Delhiite, I have always observed city been compact with buildings and traffic. The visits to National Zoological Park have given the surrounding where nature is being intact with the presence of wildlife. The zoo is always known for the animals kept in enclosures, however there are many free ranging species that are found. The work that I carried in my Master's Dissertation is on title Understanding the assemblages of birds on Ficus in and around urban area of National Zoological Park, New Delhi, has given insights of many species found, which are barely seen in and around built-up areas. For the study three species of Ficus which include Ficus bengalensis (Banyan), Ficus religiosa (Peepal) and Ficus virens (Pilkhan) has been observed on which Brown-headed barbet, Bulbuls and Indian Grey Hornbill were continually observed. Ficus religiosa has been observed with a greater number of species. Also, birds with larger beak feed on larger fruits, for instance- Indian Grey Hornbill was observed only feeding on Ficus bengalensiswhereas Bulbuls, purple sunbird and coppersmith barbet feeding on Ficus religiosa and Ficus Virens. However, Brown-headed Barbet and Yellow-footed Green Pigeon were observed feeding on all the three species of Ficus taken in account for the study. Moreover, the area around the zoo has been observed with same number of species because of ecotone.

Apart from the objectives of the study, there were many species of avian fauna were observed not only focussing species on trees, even observing aquatic birds like Great white Pelican, black-crowned night herons, little and intermediate egrets, Painted Stork, Green sandpiper and so on. Additionally, while surveying, I have also observed animals in the enclosure which was add-on to my knowledge.

I would like to thank to the Director of National Zoological Park and staff member for giving me an opportunity to carry out research in the sprawling green campus and for consistent guidance and help throughout my dissertation period.

***Meet Ms. Deepali Chatrath, A student of M.Sc. Wildlife Science** from Amity University, she has done her dissertation on bird assemblage on Ficus trees of NZP under the guidance of Dr. JanmejaySethy, Asstt. Professor of Wildlife Science in Amity University and Sri Ramesh Kumar Pandey, IFS, Director National Zoological Park.*

ख़बरें
राष्ट्रीय प्राणी उद्यान से

1. विश्व हाथी दिवस

विश्व हाथी दिवस 12 अगस्त के उपलक्ष्य पर राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में हाथियों के लिए विशेष भोजन की व्यवस्था की गई, हाथियों की इस दावत में उनके स्वाद तथा स्वास्थ्य दोनों का खयाल रखा गया।

2. तेलेंगाना राज्य वन अकादमी

तेलेंगाना राज्य वन अकादमी से 63 ट्रैनी क्षेत्र अधिकारीयों का एक दल राष्ट्रीय प्राणी उद्यान के दौरे पर आया। सभी ट्रैनी ने चिड़ियाघर के प्रबंधन तथा अन्य विभागों के बारे में राष्ट्रीय प्राणी उद्यान के अधिकारियों तथा निदेशक महोदय से जानकारी प्राप्त की।

3. विश्व गैंडा दिवस

22 सितंबर को प्राणी उद्यान में गैंडा दिवस मनाया गया। इस दिवस पर इंडियन ऑइल के साथ मिल कर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें इंडियन ऑइल के चेयरमैन श्री एस. एम. वैद्य, श्री एस. पी. यादव, मेम्बर सेक्रेटरी, केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण, तथा डॉ सोनाली घोष, निदेशक, राष्ट्रीय प्राणी उद्यान उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान प्राणी उद्यान के गैंडों के लिए विशेष भोजन की व्यवस्था की गई थी।

ख़बरें राष्ट्रीय प्राणी उद्यान से

4. हिन्दी दिवस

14 सितंबर को हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में प्राणी उद्यान में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया जिसमें प्राणी उद्यान के कर्मचारियों तथा उनके बच्चों के लिए हिन्दी कहानी एवं कविता लेखन की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

5. दो अक्टूबर को गांधी एवं शास्त्री जयंती

दो अक्टूबर को गांधी एवं शास्त्री जयंती के दिन प्राणी उद्यान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा स्वकछता अभियान का आयोजन किया जिसमे सभी ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

6. वन्य जीव सप्ताह

प्राणी उद्यान में 2-8 अक्टूबर को वन्य जीव सप्ताह का आयोजन किया गया, इस दौरान विभिन्न ऑनलाइन एवं ऑफलाइन कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया जिसमे बच्चों तथा बड़ों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया, इसी दौरान राष्ट्रीय प्राणी उद्यान के कीपर के लिए वक्र्शाप का भी आयोजन किया गया जिसमें विशेषज्ञ के रूप में अपने विषय क्षेत्र की जानीं मानी हस्तियाँ शामिल थी। वन्य जीव सप्ताह का समापन एक भव्य कार्यक्रम के आयोजन के साथ हुआ जिसमें माननीय राज्य मंत्री श्री अश्वनी कुमार चौबे जी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए।

ख़बरें राष्ट्रीय प्राणी उद्यान से

7. राष्ट्रीय प्राणी उद्यान एवं यूनेस्को एम.जी.आइ.ई.पी.

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान एवं यूनेस्को एम.जी.आइ.ई.पी. ने साथ मिलकर विश्व दयालुता दिवस 13 नवंबर के मौके पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमे स्कूली बच्चों को दयालुता का मतलब समझाया गया और उन्हें इसे अपनी दिनचर्या में शामिल करने को समझाया गया।

8. भारतीय वन्य जीव संस्थान

भारतीय वन्य जीव संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वाई.वी. झाला एक दिवसीय दौरे पर राष्ट्रीय प्राणी उद्यान आए, उन्होंने प्राणी उद्यान की निदेशक एवं रिसर्च टीम के साथ चिड़ियाघर प्रबंधन के विषय पर गहन मंत्रणा की तथा अपने विचार रखे।

Green Tips

Cigarette butts-the biggest pollutant

When we talk about cigarette the things come in our mind is a harmful object for the health of human being. But we never thought that the part of cigarette which a smoker throws here and there is actually a big pollutant or we can say detrimental to the health of our mother earth. An estimate suggests that about 4.5 trillion individual butts are polluting our environment, in other words they are actually

the most abundant form of plastic waste in the world. We think that butts are made up of cotton or paper but no, they are primarily plastic. They are made of cellulose acetate, a man made plastic material and contain hundreds of toxic chemicals. While they take 10 years to completely degrade, the chemicals released can remain in the environment for many more years.

अनुभव
स्वयंसेवकों का

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान में होना एक अद्भुत अनुभव है।यह कुछ विदेशी, संकटग्रस्त, करिश्माई पशु प्रजातियों को देखने के कुछ दुर्लभ अनुभवों को देखने के लिए एक अद्भुत साइट प्रदान करताहै।यह किसी के वन्यजीवों के प्रति मौजूदा ज्ञान और कैद में विभिन्न प्रबंधन विकल्पों में वृद्धि से कम नहीं है, ऐसा ही एक उदहारण है, स्वभाव संवर्धन है।मैं एन.जेड.पी की निदेशक डॉ. सोनाली घोष की सक्रिय भागीदारी और स्वयंसेवकों के साथ सार्वजनिक पहुंच और जागरूकता के कई तरीकों को नया करने और चिड़ियाघर कोऔर बेहतर बनाने के लिए। मैं श्री रियाज़ अहमद खानऔरश्री विभव श्रीवास्तव, को उनके निरंतर समर्थन के लिए भीअपना आभार व्यक्त करती हूं।

- आशा, स्वयंसेवी (एन.जेड.पी)

मैं, मानसीकुमार,बचपन से ही जंगली जानवरों में दिलचस्पी थी।क्योंकि मैं दिल्ली में पैदा हुईऔर पली-बढ़ी हूं, जंगली जानवरों को देखने के लिए नेशनल जूलॉजिकल पार्क मेरा सबसे पसंदीदा स्थान था।मुझे खुशी है कि मुझे यहां पहलेअपने शोध करने का अवसर मिला, और फिर मुझे एकअकादमिक स्वयंसेवक बनकर अनुभव प्राप्त करने का मौका मिला।यहां काम करते हुए मैंने न केवल बंदी प्रजातियों के प्रबंधन के बारे में सीखा, बल्कि चिड़ियाघर में आनेवाले लोगों के साथ बातचीत करने और उन्हें लुप्त प्राय प्रजातियों और उनके संरक्षण के बारे में शिक्षित करने काअनुभव भी प्राप्त किया।मुझे कई वन्यजीव विशेषज्ञोंऔरआईएफएसअधिकारियों के साथ बातचीत करने का भीअवसर मिला, औरउनकेअनुभवों से कई जानकार चीजें सीखीं।आजादी का अमृत महोत्सव का हिस्सा होने के नाते, मैंने कई बच्चों के साथ बातचीत की और उन्हें जैवविविधता के बारे में सीखते हुए देखना वाकई रोमांचक था।मैं हमेशा से चिड़ियाघर प्रबंधन मेंअपना करियर बनाना चाहती थीऔर यह स्वयंसेवा मुझे कौशल विकसित करने में मदद कर रही है जो मुझे भविष्य में मेरे करियर में मदद करेगी।

- मानसी कुमार, अकादमिक स्वयंसेविका, राष्ट्रीय प्राणी उद्यान

मैं राष्ट्रीय प्राणी उद्यान दिल्ली में स्वयंसेवा कर रही हूं और यह अद्भुतअनुभव रहा है।मुझे यहाँ रखे जानवरों के बारे में कई रोचक और उपयोगी बातें सीखने को मिलीं।जानवरों के दिन-प्रतिदिन के व्यवहार को बारीकी से काम करनेऔरदेखने से मेरा ज्ञान समृद्ध हुआ हैऔर मुझे उन्हेंअच्छी तरह से समझने का अवसर मिला है।मैं निर्देशक महोदया डॉ सोनाली घोष को उनके मार्ग दर्शनऔर स्वयं सेवकोंऔर कर्मचारियों के साथ मिलकर काम करने के लिए धन्यवाद देना चाहती हूं।मैं श्री रियाज़ अहमद खानऔर श्री विभव श्रीवास्तव को भी धन्यवाद देना चाहती हूं जो हमारा मार्ग दर्शन करते हैं।

- वर्तिका पटेल , स्वयंसेविका (स्नाकोत्तर छात्रा, पर्यावरण विज्ञान , दिल्ली विश्विद्यालय)

1. प्रजातियों की पहचान करें
(Identity the species)

a. **हिरन** (Deer) b. **मृग** (Antelope)

2. चित्र में क्या दिखाया गया है?
(What is shown in the picture?)

a. **अंतलेर** (Antler) b. **हॉर्न** (Horn)

3. प्रजातियों की पहचान करें
(Identify the species of elephant)

a. **अफ्रीकी हाथी** (African) b. **एशियाई हाथी** (Asian)

4. तस्वीर को पहचानें
(Identify the picture)

a. **तेंदुआ पैच** (Leopard) b. **जगुआर पैच** (Jaguar)

3. प्रजाति की पहचान करें
(Identify the species)

a. **कौआ** (Crow) b. **ड्रोंगो** (Drongo) c. **गौरैया** (Sparrow)

उत्तर (Answer)

मृग (Deer)

एंटलर (Antler)

अफ्रीकी हाथी (African Elephant)

तेंदुआ पैच (Leopard Patch)

ड्रोंगो (Drongo)

शब्द कोश से "जैव विविधता हॉटस्पॉट"

जैव विविधता हॉटस्पॉट ऐसे जैवभौगोलिक क्षेत्र होते हैं जो जैव विविधता से काफी समृद्ध होते हैं और मानव उपस्थिति और रहवास की वजह से खतरे में भी होते हैं। जैव विविधता हॉट स्पॉट में अधिकांश पौधे स्थानिक होते हैं। वर्तमान में, विश्व में करीब 36 जैव विविधता हॉट स्पॉट हैं, जिसमें से 4 भारत में स्थित हैं जो इस प्रकार हैं – हिमालय पर्वत, पश्चिमी घाट, इंडो-बर्मा का क्षेत्र तथा सुंडालैंड.

राष्ट्रीय प्राणी उद्यान

मथुरा रोड, नई दिल्ली-110 003
दूरभाष: +91-11-24358500, 24359825
ई-मेल: nzpzoo-cza@nic.in, वेब: www.nzpnewdelhi.gov.in

हमें फ़ॉलो करें

Design by conceptzandbeyond.com